Read India
An imprint of Pratham Books

रंग बिरंगी सुंदर मछली

जयश्री देशपांडे
मोनप्पा

RGF Pratham
SERIES

Original Story (*Kannada*) Bannada Meenu by Jayashree Deshpande
© Rajiv Gandhi Foundation – Pratham Books, 2004

Second Hindi Edition: 2009

Illustrations & Design: Monappa
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-144-0

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, New Delhi

Printed by: Pentaplus Printers Pvt. Ltd., Bangalore

Published by:
Pratham Books | www.prathambooks.org

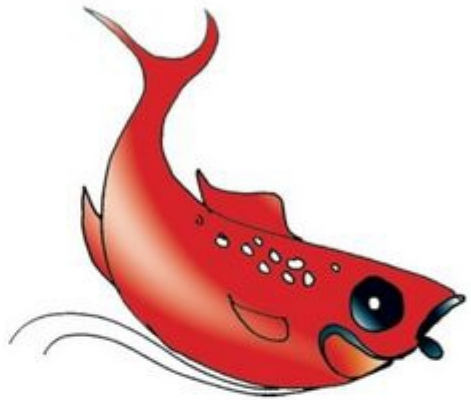

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

रंग-बिरंगी सुंदर मछली

लेखन : जयश्री देशपांडे

चित्रांकन : मोनप्पा

हिन्दी अनुवाद : के. विजया

यह पुस्तक

_____

_____

_____

की है।

राजू चाहता था कि श्यामला नदी में तैरना सीखे। उसने दादाजी से कहा, ''दादाजी, मैं चाहता हूँ कि मैं तैरना सीखूँ। क्या आप सिखाएँगे?'' दादाजी ने कहा, ''बच्चों के लिए तैराकी सीखना बहुत अच्छा है। कल से तुम्हें नदी पर ले जाऊँगा। वहाँ गल्लव्वा मास्टर होंगे, वे तुम्हें तैरना सिखाएँगे।'' राजू रात भर सपने में भी मज़े से तैरता रहा।

अगले दिन जब राजू दादाजी के साथ नदी पर गया तो वहाँ और बहुत सारे बच्चे उसी की तरह तैरने आये थे। उन्होंने राजू से पूछा कि क्या तुम भी तैरना सीखने आये हो? राजू ने जवाब दिया, ''हाँ, मैंने तुम लोगों को तैरते हुए देखा। तुम लोग कितना अच्छा तैरते हो। मेरी भी बड़ी इच्छा है कि मैं तैरूँ लेकिन कभी-कभी डर लगता है।'' उन्होंने कहा, ''ऐसे मत डरना, एक बार पानी में उतरने पर डर अपने आप भाग जाता है। फिर मछली की तरह आसानी से तैर सकते हो।'' ऐसा कहकर सभी बच्चों ने एक के बाद एक, पत्थर पर चढ़कर पानी में छलाँग लगाई और हाथ पैर फैलाकर तैरने लगे।

राजू उसी पत्थर पर पानी में पैर डाल कर बैठा तो उसके पैर में कुछ गुदगुदी सी महसूस हुई। आश्चर्य से उसने नीचे देखा तो वहाँ कई छोटी-छोटी मछलियाँ उसके पैर को छू-छूकर, इधर-उधर तैर रही थीं। वे हरी, पीली और राख के रंग की थीं। उन सभी की लम्बी और पतली सी पूँछ थी।

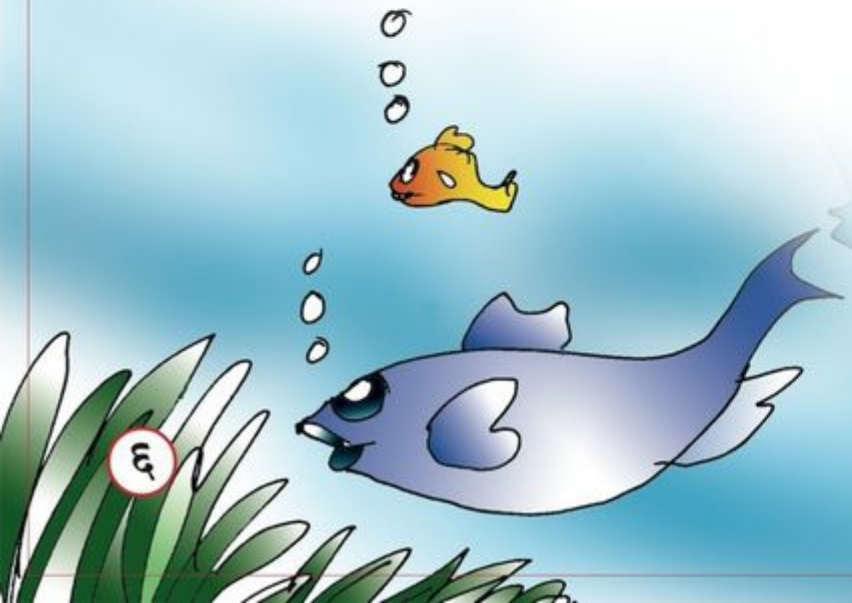

एक मछली, जिसकी पूँछ कुछ बड़ी थी, तेज़ी से तैरती हुई राजू की ओर आई। उसने कहा, ''अरे, राजू यहाँ क्या कर रहे हो?''

राजू ने कहा, ''मैं भी तुम लोगों की तरह तैरना चाहता हूँ। तुम्हारा डुबकी मार कर ऊपर आना कितना अच्छा लगता है।''

तब मछलियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं, ''हाँ, हम लोग जल में ही पैदा होती हैं और यहीं जीवन जीती हैं न,'' बड़ी मछली ने कहा। फिर वह बोली, ''इस तरह जब हम लोग मज़े से पानी में तैरती हैं तब इंसान जाल डालकर हमें पकड़ लेता है।''

राजू ने कहा, ''हाँ, हाँ, मछुआरे जाल फैलाकर तुम्हें पकड़ लेते हैं और बाज़ार ले जाकर बेच देते हैं ऐसा मैंने किताबों में पढ़ा है।''

मछली ने कहा, ''और क्या-क्या पढ़ा है तुमने किताबों में?
क्या तुम जानते हो कि मछलियों की कितनी जातियाँ
और किस्में होती हैं?'' एक और मछली ने पूछा,
''क्या तुमने वह काँच की पेटी देखी है
जिसमें हमें कैद करके रखते हैं?''

FAMOUS FISHES
FAMOUS FISHES

बड़े उत्साह के साथ राजू ने कहा, ''ओहो, हमारे शहर में एक मत्स्यागार (एक्वेरियम) है। वहाँ सैंकड़ों काँच के टैंकों में बहुत सुन्दर-सुन्दर मछलियाँ रखी गई हैं। कुछ लोग घर पर इसी प्रकार काँच के टैंक में पानी भर कर उसमें रंग बिरंगी मछलियाँ रखते हैं। लाल, पीली, केसरिया, नीली और सुनहरे रंगों की, छोटे-बड़े, अलग-अलग आकार की मछलियाँ होती हैं। हमारे घर में भी एक मछलियों का टैंक है।''

''हाँ, राजू प्रकृति ने हमें यूँ ही सुन्दर रूप, छोटा-बड़ा आकार, तरह-तरह के रंग दिये हैं। हम बहुत सीधे जीव हैं। समुद्र में, नदी में या तालाब, पोखर और सरोवरों में बिना किसी डर के तैरते रहना चाहते हैं लेकिन तुम इंसान हमारी विद्या तो सीख लेते हो फिर भी हमें निडर होकर जीने नहीं देते,''
उदास चेहरा बनाए एक मछली ने कहा। ''ओह, ऐसा क्या? तुम्हारा कहना सच है।'' राजू ने कहा।

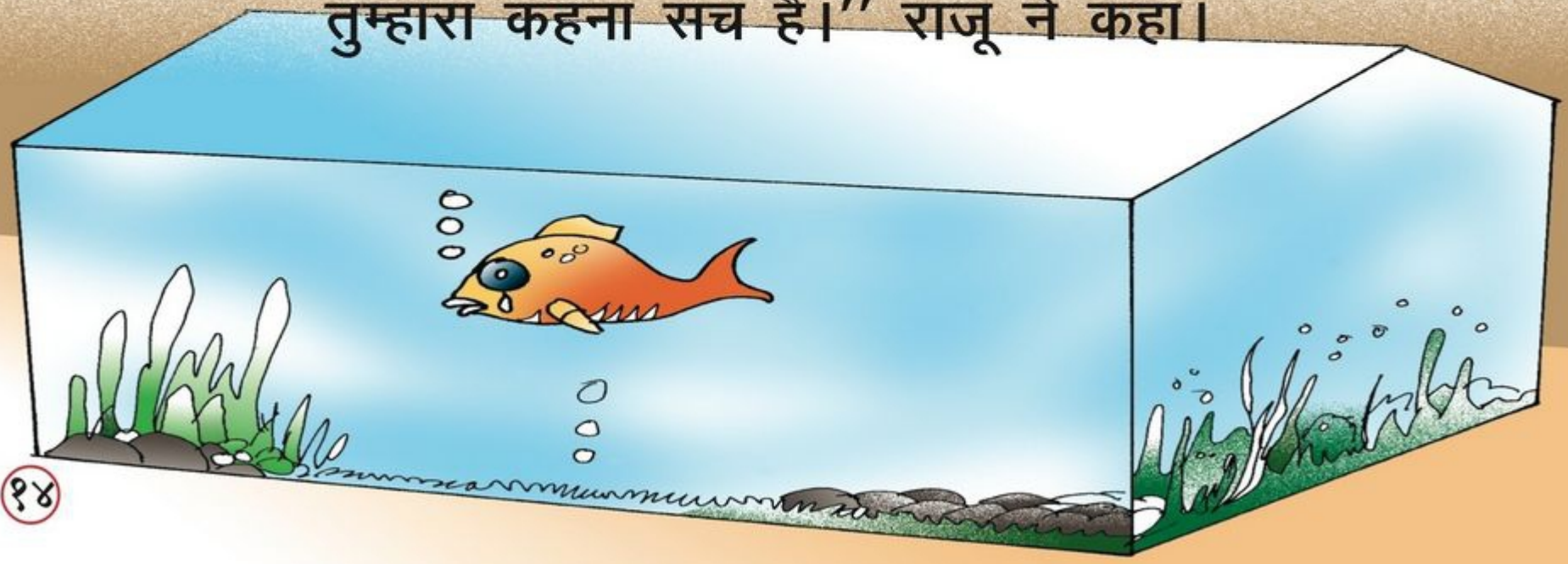

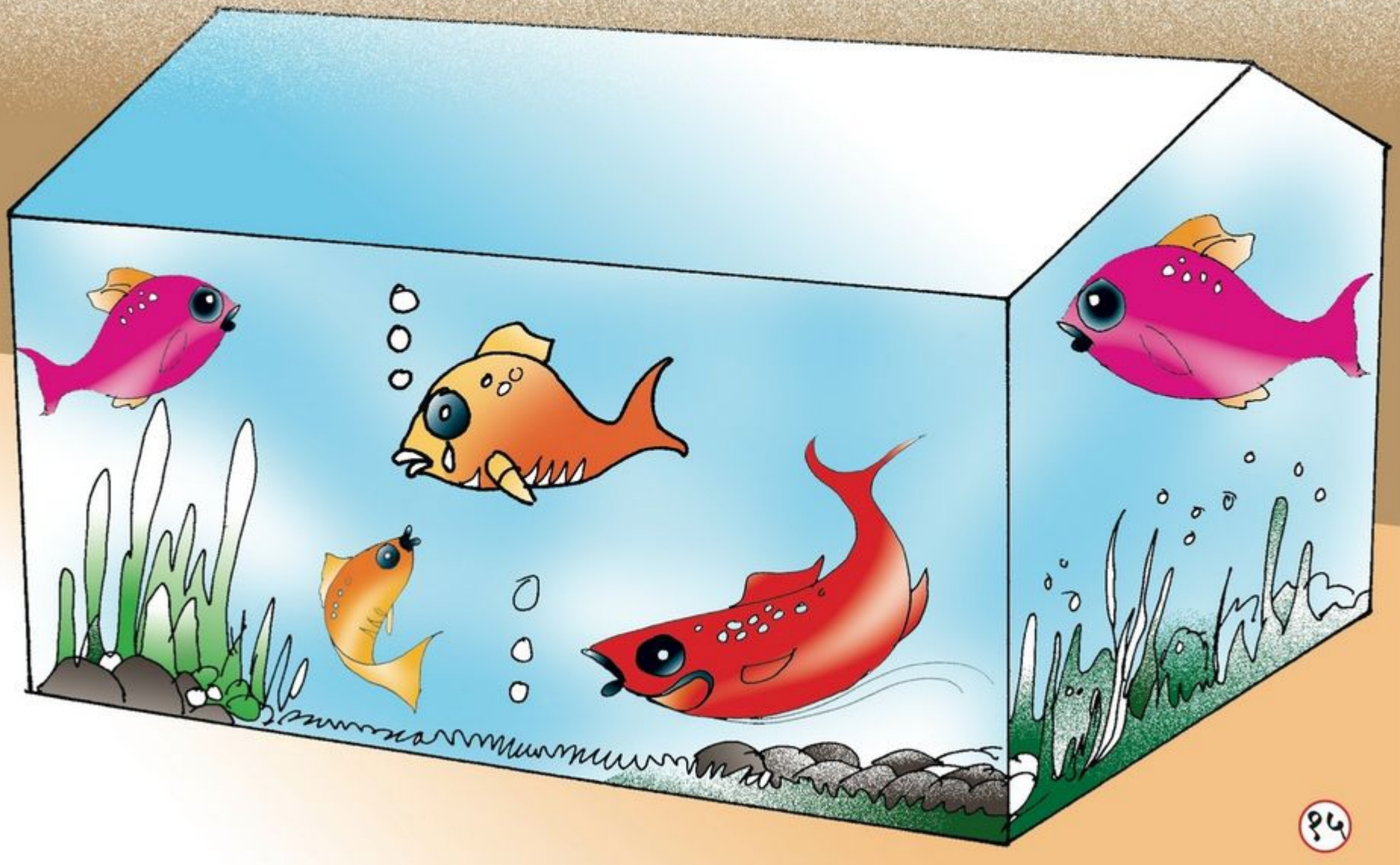

बड़ी मछली ने कहा, ''तुम लोग हमें एक छोटे से पानी के टैंक में कैद कर देते हो और खाना भी ठीक से नहीं मिलता। यह जीवन हमें बिल्कुल पसंद नहीं। वहाँ तैरने के लिए जगह भी नहीं होती, ठीक से हवा नहीं होती, हमारे रिश्तेदार हमारे पास नहीं होते। छोटे-से काँच के टैंक में हम बहुत दुखी हो कर रहते हैं। लेकिन इंसान हमारी तकलीफ़ को समझता कहाँ है?''

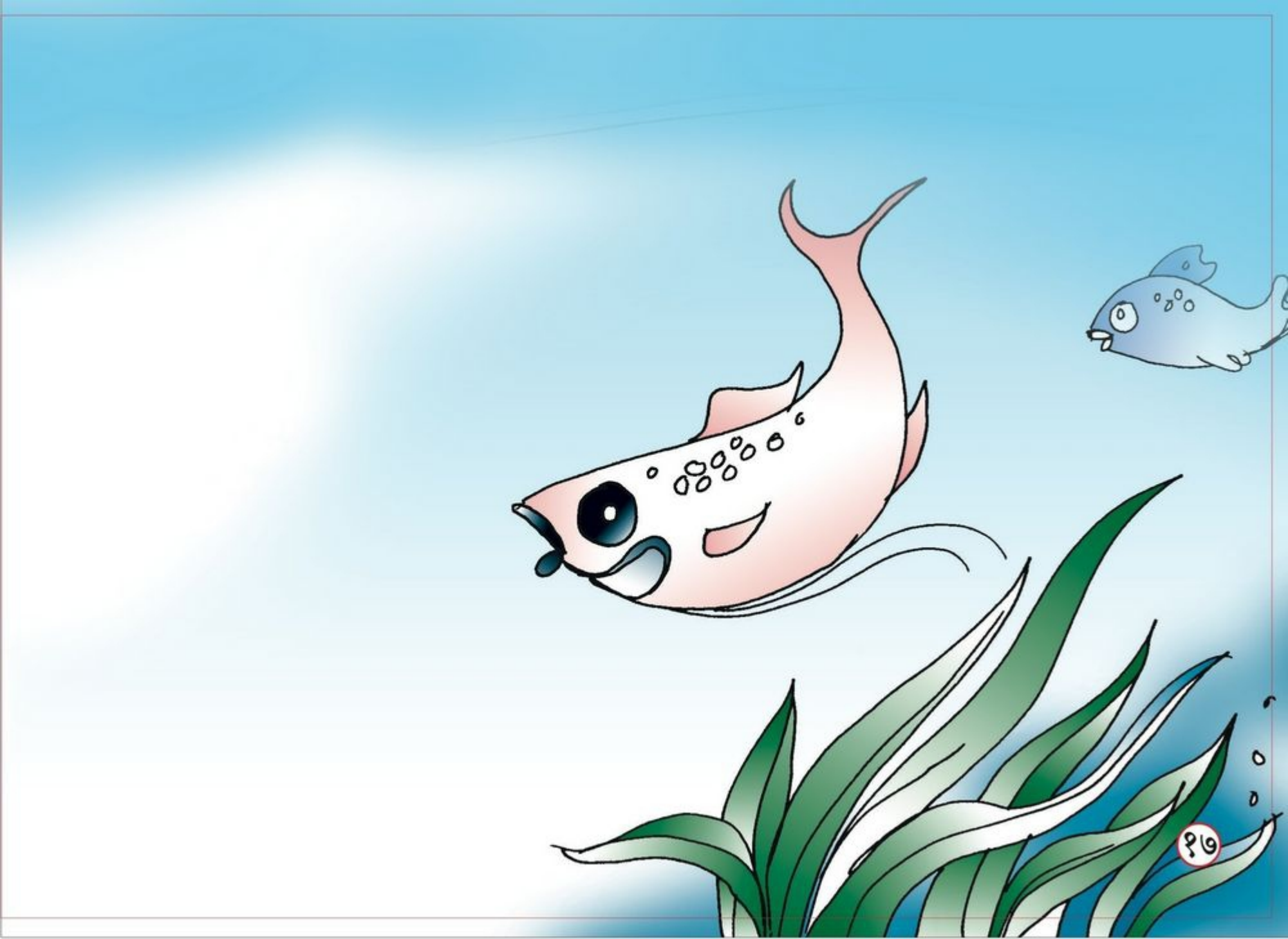

इस बात को सुनकर राजू को भी दुःख हुआ। कोई भी प्राणी या पंछी बंधन में रहना पसंद नहीं करता। आज़ादी तो सभी को प्रिय है। राजू को लगा कि उन्हें बंधन में नहीं रखना चाहिए।

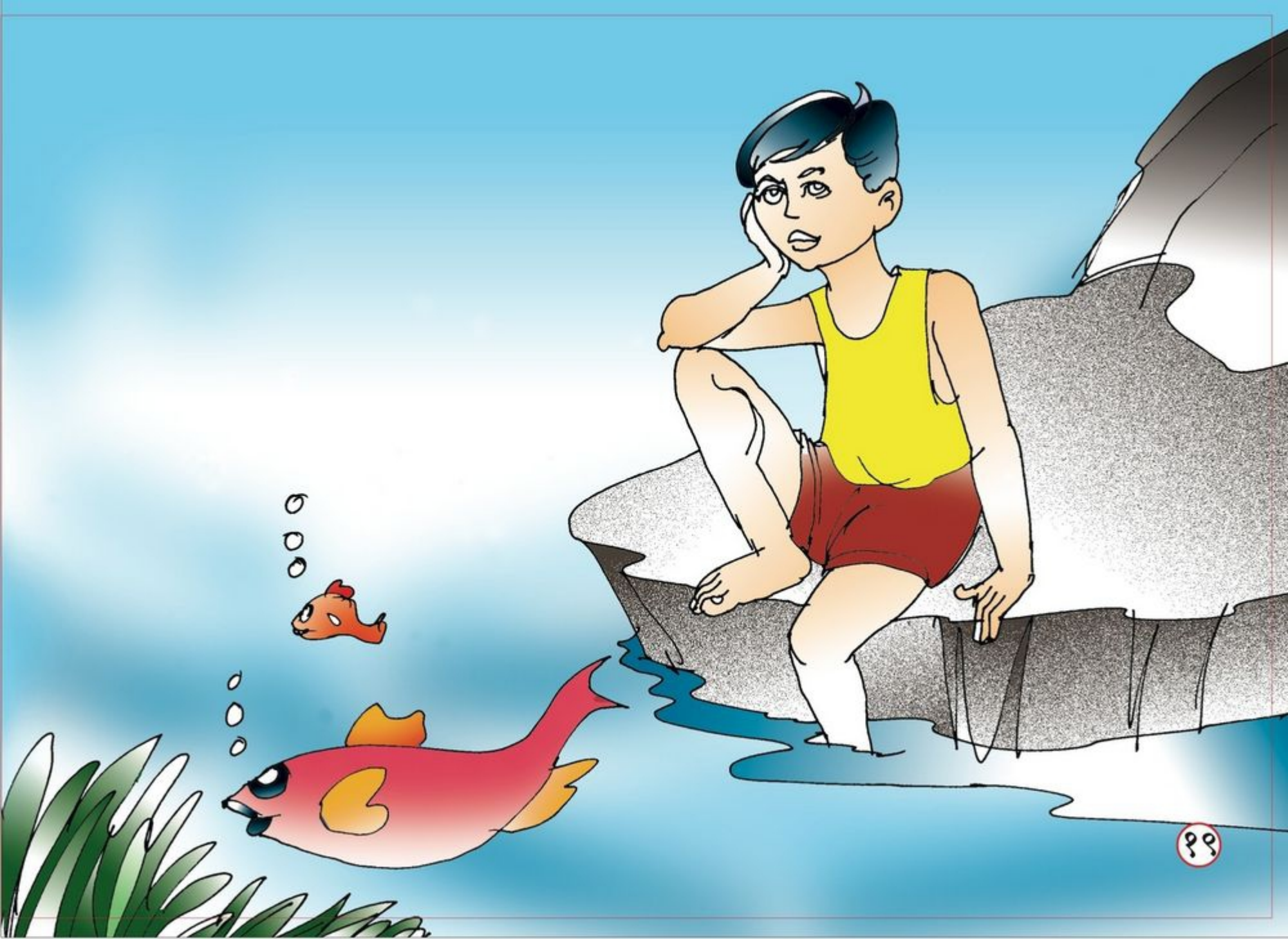

राजू ने कहा, ''जब मैं शहर जाऊँगा, जो मछलियाँ मेरे घर में हैं, उन्हें तालाब में छोड़ दूँगा। अपने दोस्तों से भी यही कहूँगा कि वे भी ऐसा ही करें। अब तो तुम खुश हो न?'' मछलियों ने कहा, ''अब हम खुश हैं। तुम बड़े अच्छे लड़के हो!'' सभी मछलियों ने राजू के कदम चूमे और फिर पानी की गहराई में खो गईं।

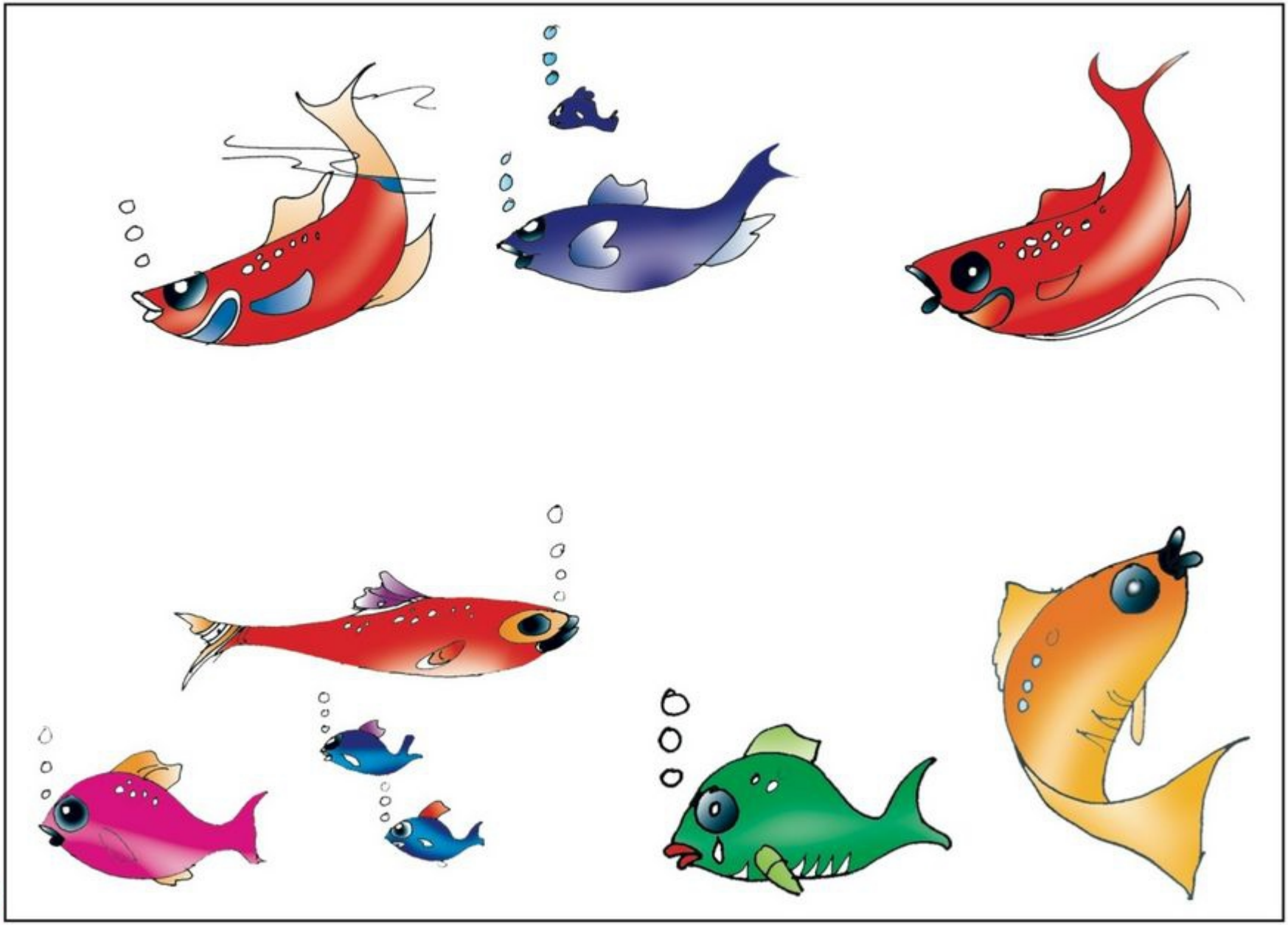

इस चित्र में रंग भरो।

इस चित्र में रंग भरो।

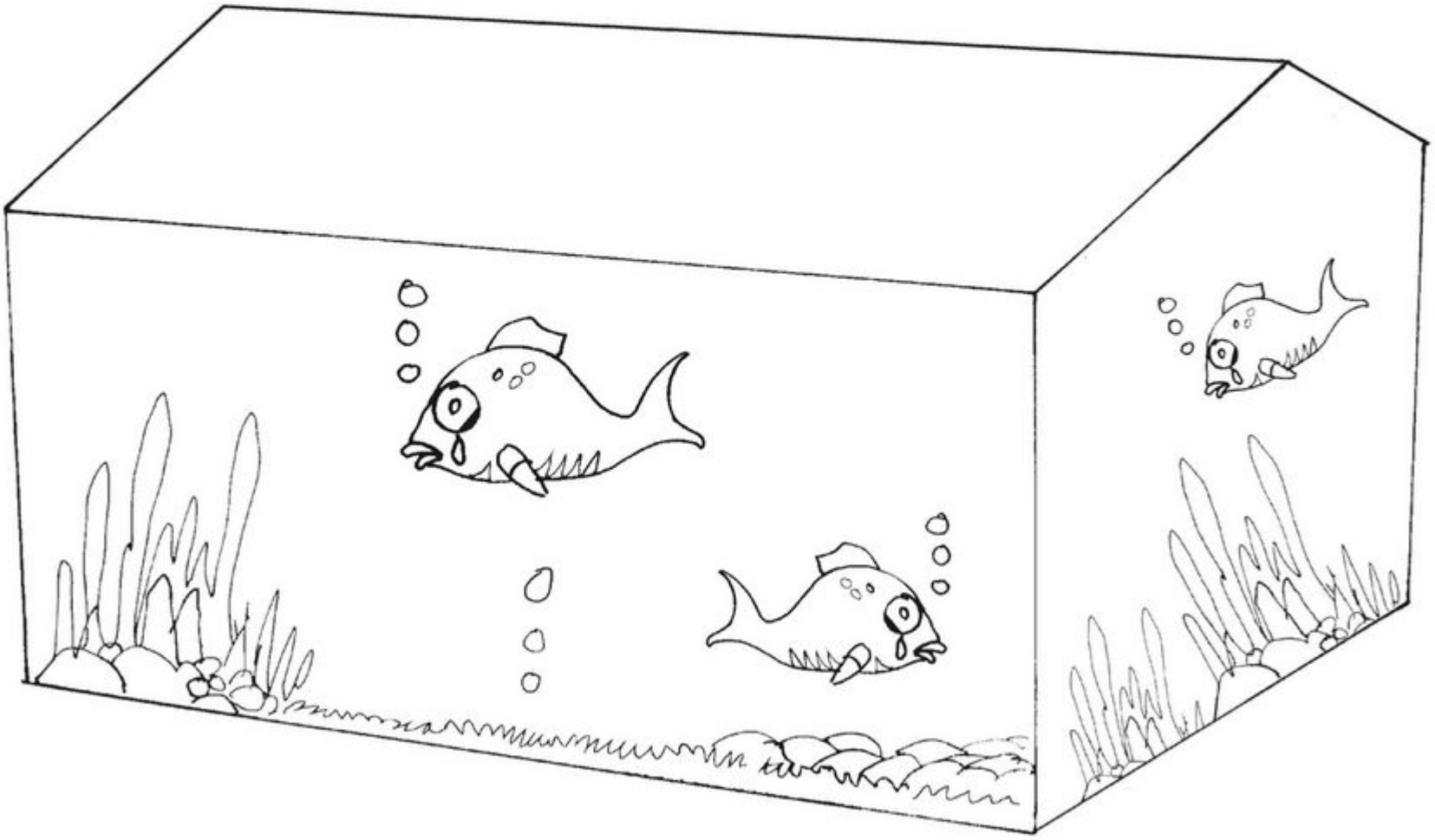

मेरा नाम अल्फ़िया है और पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे अपने नाना के जैसे इंजीनियर बनना है। शाहिद कपूर और करीना की फ़िल्में देखना पसंद है।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

जयश्री देशपाण्डे ने कन्नड़ में बहुत सी लघु कथाएँ, निबन्ध, हास्य लेख व उपन्यास लिखे हैं। वे पन्द्रह वर्षों से लिखती आ रही हैं और उनकी कहानियाँ सभी मुख्य कन्नड़ पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। उन्होंने अमेरिका व यूरोप में यात्रा करी है और उन्हें यात्रा वृत्तान्त लिखना भी अच्छा लगता है। उन्हें यात्रा, फ़ोटोग्राफ़ी व साहित्य में रुचि है।

मोनप्पा एक चित्रकार हैं जिन्होंने कई कन्नड़ प्रकाशकों के साथ काम किया है। बीस साल तक नौकरी करने के बाद उन्होंने अपना कला स्टूडियो शुरू किया। वे कई मीडिया संस्थाओं व पुस्तक प्रकाशकों के लिये काम कर रहे हैं।

अक्वेरियम में रंग बिरंगी मछलियों को देखना हम सब को अच्छा लगता है।
पर क्या आपने सोचा है कि यह मछलियों को कैसा लगता होगा?
इस किताब में राजू और मछलियों की बातचीत सुन कर मालूम करें...

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

नौका विहार ● मछली ने समाचार सुने ● गौरैया और अमरूद
कौए के रिश्तेदार ● राजू और तरकारी ● कुहू–कुहू कोयल
कछुआ और खरगोश ● स्वाद अनार का ● बुलबुलों वाला फेनीला दूध

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये **www.prathambooks.org** पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की
बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 818263144-0
9 788182 631441

Age Group: 7-10 years
Rang Birangi Sundar Machli (Hindi)
MRP: Rs. 20.00